इकाई 21 चीन और प्रथम विश्व युद्ध

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले की चीन की राजनीतिक स्थिति को समझ सकेंगे,
- युद्ध में चीन के उलझाव को, और यह भी, समझ सकेंगे कि किस तरह पूर्वी एशिया में चीन के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से जापान ने इक्कीस मांगों के रूप में अपने शत्रुतापूर्ण प्रयास किये,
- यह जान सकेंगे कि चीन ने इक्कीस मांगों की क्या प्रतिक्रिया दी,
- पेरिस शांति संधि सम्मेलन और इसके प्रति चीन की प्रतिक्रिया के विषय में जान सकेंगे, और
- यह समझ सकेंगे कि किस तरह चीनी भावनाओं का विस्फोट 1919 में 4 मई के आंदोलन के रूप में सामने आया।

21.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले की चीन की राजनीतिक स्थिति की छानबीन करेंगे। इस इकाई में युद्ध में चीन के उलझाव और इक्कीस मांगों के रूप में जापान के आक्रामक क्रियाकलापों पर भी विचार किया गया है। हमने 1919 की 4 मई की घटना की भी चर्चा की है। हमने इस बात पर भी विचार किया है कि शांति सम्मेलन से चीन की क्या अपेक्षाएँ थीं। पेरिस संधि की शर्तों ने चीन की आशाओं को झूठा साबित कर दिया और चीन में इसकी प्रतिक्रियाएँ हुईं। इस इकाई में इस पक्ष पर भी विचार किया गया है।

21.2 प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले चीन की स्थिति

इकाई 17 में हमने 1911 की क्रांति की पृष्ठभूमि में काम करने वाली सामाजिक शक्तियों

और उसकी प्रमुख खामियों की छानबीन की है। संक्षेप में दोहराया जाये तो, 1911 की क्रांति ने बेशक चीन की राजनीतिक दुनिया का रूप ही बदल दिया था। फिर भी, चीन के सामने जो कुछ बुनियादी समस्याएँ थी उनका हल यह क्रांति नहीं दे पायी। विदेशी साम्राज्यवादी उपस्थिति और गहरी या मजबूत हो गयी। स्थानीय स्तर पर आर्थिक अस्थिरता की स्थिति थी, और अंतिम विश्लेषण में क्रांति ने कोई राजनीतिक स्थिरता भी प्राप्त नहीं की। लगभग क्रांति के समाप्त होते ही उसके बुनियादी सिद्धांत भी समाप्त हो गये।

सन् 1912 में नये गणतंत्र का राष्ट्रपति बनाये गये साम्राज्यिक सेनापति, युआन शी काई, ने तुरंत यह स्पष्ट कर दिया कि उसने नये चीन की जो कल्पना की थी उसमें एक गणतांत्रिक और जनतांत्रिक समाज बनाने की बात शामिल नहीं थी। युआन स्वयं तो मांचुओं से छुटकारा पाने को तुरंत सहमत था, लेकिन उसकी अपनी महत्वाकांक्षाएँ राजतंत्रीय ही थीं। क्रांतिकारियों ने उससे इस अपेक्षा से संपर्क किया था कि वे उस पर नियंत्रण रखने में समर्थ होंगे। यूरोपीय ताकतों ने उसे इसलिए मौन समर्थन दिया क्योंकि वे उसे स्थिरता के प्रतीक के रूप में देखते थे। युआन एक नये चीन में काम करने वाला परंपरागत साम्राज्यवादी था, जो एक गणतंत्र का राष्ट्रपति तो था लेकिन उसकी महत्वाकांक्षा सम्राट बनने की थी। इसी कारण कांग याउन्वे ने युआन को उसकी राजतंत्रीय महत्वाकांक्षाओं के लिये लताड़ते हुए, उसे लिखा : "मांचू के शाही घराने के दृष्टिकोण से तुम एक सत्ता हड़पने वाले हो, और गणतंत्र के दृष्टिकोण से तुम एक गद्दार हो।"

इस तरह की आलोचना के बावजूद, युआन ने शाही प्रथा को आधुनिक वैधानिक व्यवहार से मिलाने का प्रयास किया। उसने शाही दरबार बुलाये, सामंतों को खिताब दिये और मतदाता कानून बदलवाकर अपने आपको गणतंत्र का आजीवन राष्ट्रपति बनवा लिया। युआन के संपूर्ण सत्ता हथियाने के प्रयासों को समर्थन देने के लिए जनता की ओर से समर्थन का प्रदर्शन करवा दिया गया। उदाहरण के लिये, प्रतिनिधियों को यह आदेश दिया गया कि वे इस बात पर विचार-विमर्श करें कि चीन में राजनीति का क्या स्वरूप होना चाहिए। जैसा स्वाभाविक ही था, इन पढ़ाए हुए प्रतिनिधियों ने "वर्तमान राष्ट्रपति युआन शी काई से सादर यह आग्रह किया कि वह चीनी साम्राज्य के सम्राट की पदवी ग्रहण करें।" अपने सम्राट बनने की आशा में, युआन ने शाही भट्टों को उसके महल के लिये 40,000 चीनी मिट्टी के पात्र तैयार करने का आदेश दे दिया। लेकिन जापान ने 21 माँगों के रूप में चेतावनी देकर युआन की सम्राट बनने की योजना को बीच में ही काट दिया।

21.2.1 युआन की महत्वाकांक्षाओं का विरोध

युआन का शाही राज जनवरी, 1916 को शुरू होना था। जब युआन के इरादों का जनता को पता चला तो उसका विरोध भी खुलकर सामने आ गया। इस तरह 1911 की क्रांति के जनकों को 1913 में युआन की गद्दारी से बहुत निराशा हुई थी। लेकिन, अब जो बात स्पष्ट दिखायी दे रही थी वह यह थी कि जिन सुधारकों ने चिंग के अधीन एक सीमित राजतंत्र के विचार का समर्थन किया था, वे भी अब चीन में राजतंत्र की फिर से स्थापना का समर्थन करने के इच्छुक नहीं थे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस सीमा या अंश तक ही 1911 की क्रांति का प्रभाव स्थायी रहा।

दक्षिणी चीन और विदेश के क्रांतिकारी चौकन्ने हो गये। यहाँ तक कि जिन नरमपंथी रूढ़िवादियों ने युआन का समर्थन किया था वे भी अब उससे अलग हो गये। उनमें सबसे प्रमुख था लियांग की चाओ। उसने युआन सरकार में अपने न्याय मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया, फिर वह त्येनजिंग चला गया जहाँ से उसने युआन की राजतंत्रीय महत्वाकांक्षा पर प्रहार करना शुरू कर दिया।

दूसरों ने भी अपेक्षाकृत सीधे-सीधे युआन का प्रतिरोध किया। एक युवा सेनापति, त्साई आओ, ने युनान प्रांत में एक राष्ट्रीय सुरक्षा सेना का गठन किया जिसने उसके नेतृत्व में अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया। क्वीचाउ, क्वेंगसी, चीचयेंग, सीचुआन प्रांतों ने उसका अनुसरण करते हुए स्वाधीनता की घोषणा कर दी।

सन् 1913 के विपरीत, युआन अब अलगाव की इस धारा पर काबू नहीं कर सका। उत्तरी चीन तक में उसका नियंत्रण हाथ से निकल रहा था। वह जिस सेना पर निर्भर करता था, वह भी अब उसका समर्थन करने की इच्छुक नहीं थी। इस प्रतिरोध के चलते युआन को सेवानिवृत्त होना पड़ा और राष्ट्रपति का पद उप-राष्ट्रपति, ली युआन हुंग, को दे दिया गया। 1916 में युआन की अचानक मृत्यु से यह मुद्दा हमेशा के लिए हल हो गया।

21.2.2 युआन की मृत्यु के परिणाम

युआन की मृत्यु से राजनीतिक विखंडन, अर्थात् "युद्ध नेताओं के राज के दौर की शुरुआत हुई। समूचे चीन या उसके किसी एक भाग पर कब्जे के लिये राजनीतिक और सैनिक खींचतान का एक दौर शुरू हुआ। एक ही प्रांत के भीतर भी कभी-कभी कई युद्ध नेता होते थे। युद्ध नेताओं और राजनीतिकों के बीच सत्ता के लिए और अधिक छल-कपट चलने के कारण राजनीतिक स्थिति और भी खराब हो गयी। यह राजनीतिक संघर्ष कई चरणों में चला।

युआन की मृत्यु के तुरंत बाद, इस बात के प्रयास किये गये कि ली युआन हुंग को राष्ट्रपति और तुआन ची जुई को प्रधानमंत्री के रूप में लेकर संसद का फिर से संयोजन किया जाए। लेकिन समस्याएँ वैसी की वैसी रहीं। संसद का संयोजन तो हुआ, लेकिन पीयेंग सेनापति अपने अधिकारों का इस्तेमाल वैसे ही करते रहे। उत्तर और मध्यवर्ती प्रांतों के सेनापतियों ने एक पुराने मांचू समर्थक, सेनापति चेंग चुन के नेतृत्व में एक अंतप्राँतीय संघ बना लिया। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री तुआन ची जुई को चीन के विश्व युद्ध में शामिल होने के मुद्दे को लेकर त्याग पत्र देना पड़ा।

सन् 1917 में अंतिम चिंग शासक, शुआन तुंग सम्राट की राजगद्दी पर वापसी के एक थोड़े समय के प्रयास ने राजनीतिक अनिश्चितता को और बढ़ा दिया। (यह स्मरणीय है कि उसने युआन शी काई के इशारे पर गद्दी छोड़ दी थी) सेनापति चेंग शुन और केंग यू वी इस प्रयास में सक्रिय रूप से शामिल थे। सेनापति चेंग ने केंग की मदद से पीकिंग पर कब्जा कर लिया और एक बार फिर अंतिम चिंग सम्राट को गद्दी पर वापिस लाने का प्रयास किया। यह वापसी लगभग दो सप्ताह तक रही क्योंकि दूसरे सेनापतियों ने तेजी से कार्यवाही करके इसे दबा दिया। उन्होंने तुआन ची जुई का साथ दिया और वह एक बार फिर प्रधानमंत्री बन गया। इसके परिणामस्वरूप संसद युद्ध नेताओं के कब्जे में मजबूती से आ गयी। इससे दक्षिण प्रांत और भी कट गये।

इस गहराते हुए संकट के दूसरे चरण में, दक्षिणी प्रांत 1917 में संसद से अलग हो गये। कुओमिनतांग और सून यातसेन ने 1917 में कैंटन में कोई 250 सांसदों को लेकर एक सभा बुलाने का प्रयास किया। यहाँ एक सैनिक सरकार का गठन किया गया जिसका महा सेनापति सून को बनाया गया। लेकिन, इस बार भी असली सत्ताधारी स्थानीय युद्ध नेता ही रहे।

देश वैसे तो तेजी से राजनीतिक विघटन की ओर बढ़ रहा था, लेकिन बीजिंग और उसके आसपास के क्षेत्रों पर नियंत्रण करने वाला गुट अब भी इस भ्रम को बनाये हुए था कि वह चीनी गणतंत्र का प्रतिनिधित्व करता था। अगस्त 14, 1917 को प्रधानमंत्री तुआन ने जर्मनी के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। तुआन स्वयं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा था। बैयांग सेनापति गुटों में बिखर गये थे। (आनहुई और फ्यूजिआन प्रांतों के सैन्यवादियों वाला) आनफू गुट तुआन का समर्थन कर रहा था और जीली गुट एक और सेनापति फेंग कू चेंग का समर्थन कर रहा था। तुआन ने जापान से ऋण लेकर अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया! प्रकट में तो ये ऋण जर्मनों से लड़ने के लिए लिए गए थे, लेकिन वास्तव में उनका उपयोग उसके शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध के लिए किया गया।

दक्षिण में भी, सून की कैंटन संसद में विभाजन हो गया। सून को मई, 1918 में बाध्य होकर शंघाई चला जाना पड़ा। अब दक्षिण में सैन्यवादियों के क्वेंगसी गुट का वर्चस्व या बोलबाला हो गया।

युद्ध के दौरान जापान की नाटकीय और आक्रामक कार्यवाहियों के कारण चीन का राजनीतिक संकट और गहरा हो गया।

21.2.3 बदलता आर्थिक परिदृश्य

प्रथम विश्व युद्ध जिस समय हुआ, वह चीन में गिरती राजनीतिक स्थिति का समय था, फिर भी इसने चीनी उद्योग को काफी बढ़ावा दिया।

युद्ध के परिणामस्वरूप, पश्चिमी प्रतिद्वंद्विता का दबाव कम हो गया। चीनी उद्यमियों ने इस अवसर का लाभ उठाया। लेकिन औद्योगिक बाढ़ विदेशी प्रशासन वाले उन संधिगत बंदरगाहों में आयी जो संधि व्यवस्था के जरिए युद्ध नेतागिरी से सुरक्षित थे।

कुछ समय से एक नए सौदागर वर्ग के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी। 1901 के बाद, उन्हें सरकारी नीतियों से पोषण मिला। 1914 तक 1000 से भी ऊपर वाणिज्य मंडल थे जिनकी सदस्यता 200,000 से भी अधिक थी। बड़े स्तर के उद्यमों पर विदेशी कंपनियों का वर्चस्व बना रहा। 1914 तक एक आधुनिक चीनी प्रशासनिक और उद्यमी वर्ग के उदय की शुरुआत हो चुकी थी। (इस आर्थिक वृद्धि के आयामों पर बाद में एक इकाई में विचार किया गया है।)

21.3 विश्व युद्ध और चीन

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, युद्ध का समय चीन में भयंकर राजनीतिक परिवर्तन का भी समय था। जब 1914 में युद्ध छिड़ा तो, चीन ने तटस्थ रहने की घोषणा की। लेकिन विदेशी ताकतों की उपस्थिति के कारण चीन को आवश्यक तौर पर इस अंतर्राष्ट्रीय युद्ध में आना पड़ा। जापान ने मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल होकर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। जापानी सेनाएँ उत्तरी शांतुंग में उतरीं, जिससे चीन की तटस्थता का निरादर हुआ। नवंबर, 1914 में, जापानियों ने जर्मनी के कब्जे वाले किंगताओं बंदरगाह को अपने नियंत्रण में ले लिया और फिर वे पूरे शांतुंग को अपने अधिकार में करने के लिए आगे बढ़े।

युआन शी काई को गुप्त रूप से इक्कीस माँगे देने के लिए आधार तैयार करने की दशा में जापान की ओर से यह पहली कार्यवाही थी। अगर इन माँगों को हूबहू मान लिया जाता तो, जापान फिर अपने और बड़े साम्राज्वादी लक्ष्यों को प्राप्त करता।

21.3.1 इक्कीस मांगें

जापान ने अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों को सामान्य तौर पर पूर्व में और विशेष तौर पर चीन में उस समय स्थायी करने का प्रयास किया जब पश्चिमी साम्राज्यिक ताकतें विश्व युद्ध में व्यस्त थीं। चीन-जापान संबंधों में एक बुनियादी समस्या चीन में पश्चिमी ताकतों की तुलना में जापान की भूमिका और शक्ति को लेकर जापान का असंतोष था। अमेरिका और यूरोपीय वित्त समूहों के पास जो रेलपथ और उत्खनन की रियायतें थीं उनमें से अधिकांश के एकाधिकारी स्वरूप के कारण जापान के लिए यह खतरा बन गया था कि उसे विकास प्रक्रिया से पूरी तौर पर बाहर कर दिया जाएगा और वह राजनीतिक लाभों से वंचित हो जाएगा। चार ताकतों के (इंग्लैंड,. फ्रांस, जर्मनी और रूस) संघ के 15 अप्रैल, 1911 के समझौते के अनुसार चीन ने इन चार राष्ट्रों को चीन को कोश और पूँजी उपलब्ध कराने के लगभग विशेष अधिकार दे दिए। इस तरह के समझौतों को जापान ने चीन में जापानी निवेश की संभावनाओं को काटने के चीनी और यूरोपीय प्रयासों के अतिरिक्त प्रमाण के रूप में देखा। जापान ने चीन में अपने हितों की रक्षा और उनके विस्तार के लिए जो राजनीतिक उपाए किए थे वे इक्कीस मांगों के रूप में सामने आये।

जापानी राजनीति की अपेक्षाओं ने भी इस आक्रामक नीति को आकार देने में एक बड़ी भूमिका अदा की। यहाँ हमें जापान के दवाबों में जाने की आवश्यकता नहीं है, फिर भी इतना कहना पर्याप्त होगा कि पूर्वी एशिया में नेता बनने की महत्वकांक्षा, बढ़ती आबादी के लिए निकासी, बाजारों और संसाधनों तक पहुँचने के लिए पड़ने वाले दबाव, इन सबने इक्कीस माँगों की पृष्ठभूमि तैयार की। विश्व युद्ध ने जापान को उसके हितों की रक्षा करने और नये हितों को प्राप्त करने की उसकी संभावना और क्षमता के सभी संदेहों और असुरक्षाओं को दूर करने का अवसर दे दिया। चीन में जापानी मंत्री ने कथित तौर पर कुछ-कुछ चित्रात्मक और स्पष्ट शब्दों में जापान के इरादों को व्यक्त किया था। "विश्व भर में व्याप्त वर्तमान संकट ने वास्तव में मेरी सरकार को दूरगामी कार्यवाही करने को बाध्य किया है। जब किसी जौहरी की दूकान में आग लगती है तो, पड़ोसियों से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे अपनी मदद या बचाव नहीं करेंगे।"

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, **इक्कीस माँगों** में से कई माँगे ऐसी थीं जिनमें यह प्रयास किया गया था कि जापान को चीन में वैसे ही अधिकार मिलें जैसे यूरोपीय ताकतों को एक लंबे समय से मिले हुए थे। इन माँगों के पीछे उत्प्रेरक का काम करने वाली जापान की शांतुंग में जर्मनी पर विजय थी। सवाल अब शांतुंग में जर्मनी को प्राप्त पट्टों के और आर्थिक अधिकारों के निपटारे का था और जापान उन्हें हथियाने को आतुर था।

चीनी राष्ट्रपति, युआन शी काई, को 7 मई, 1915 को इक्कीस माँगों की शक्ल में एक अल्टीमेट्म दिया गया। यह वह दिन था जिसे चीनी छात्र और राष्ट्रवादी राष्ट्रीय अवमानना दिवस के रूप में मनाते थे।

21.3.2 इक्कीस माँगें क्या थी?

इन माँगों में व्यापक मुद्दों को शामिल किया गया था। उन्हें पाँच वर्गों में रखा गया था।

1) पहले वर्ग में शांतुंग प्रांत से संबंधित माँगें थी : इसके तहत चीनी सरकार से यह आग्रह किया गया था कि वे शांतुंग में जर्मन अधिकारों पर जापान के निर्विवाद अधिकार को मान्यता दे। इसके अलावा चीन को इस बात पर सहमत होना था कि वह शांतुंग का कोई भी भाग किसी और ताकत को पट्टे पर या पृथक करके नहीं देगा। चीन से रेलपथ निर्माण के अधिकार देने की भी माँग की गयी थी। इस क्षेत्र में चीनी नगरों को विदेशियों के लिए खोलने की भी माँग की गयी।

2) दूसरे वर्ग में दक्षिणी मंचूरिया और आंतरिक मंगोलिया से संबंधित माँगे थीं। इस वर्ग के तहत जापान ने पोर्ट आर्थर और आंतुंग मुकदेन रेलपथ के पट्टे को निन्यानवे साल के लिए बढ़ाने की माँग की। यह माँग की गयी कि जापानी नागरिकों को वास्तविक संपत्ति को व्यापारिक या वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए पट्टे पर लेने या अपने स्वामित्व में रखने की अनुमति दी जाए, और उत्खनन के विशेष अधिकार दिए जाएँ।

यह माँग की गई कि चीन किसी तीसरी ताकत को रेलपथ निर्माण के अधिकार देने से पहले या इस तरह के निर्माण के लिए वित्तीय ऋण लेते समय जापान की सहमति प्राप्त करे।

इसके अलावा चीन से यह भी माँग की गई कि वह "राजनीतिक, वित्तीय या सैनिक मामलों में निर्देशकों या सलाहकारों की नियुक्ति करने" से पहले जापान से परामर्श ले।

3) तीसरा वर्ग हानयेपिग कंपनी से संबंधित था। इसमें यह माँग रखी गयी थी कि चीन इस कंपनी में जापानी पूँजीपतियों के विशेष हितों को मान्यता दे, और जापान की इच्छा थी कि चीन इस कंपनी को जापान और चीन के संयुक्त प्रबंधन में रखे। इस वर्ग में भी यह माँग रखी गई कि चीन इस कंपनी से संबंधित किसी भी अधिकार का निपटारा जापान की पूर्व अनुमति के बिना नहीं करे। इसके अलावा चीन से यह भी कहा गया कि वह पड़ोसी खानों में जापानी पूँजीपतियों के हितों की रक्षा करे।

4) वर्ग चार में चीन के तट को और चीन के तट से हटकर स्थित द्वीपों को पृथक न होने देने संबंधी माँगें थीं। इसके अनुसार चीन किसी तीसरी ताकत को चीन के तट पर या उससे हटकर स्थित कोई बंदरगाह या खाड़ी पट्टे पर या पृथक करके नहीं दे सकता था।

5) वर्ग पाँच सबसे विवादास्पद माँग वर्ग था। इस वर्ग में "विचाराधीन और अन्य सवालों के समाधान से संबंधित प्रस्ताव" कही जाने वाली व्यापक माँगें शामिल थीं और इन्हें जापानी विदेश मंत्रालय माँग न कह कर "इच्छाओं" का मंगल नाम देता था।

वास्तव में, इसमें कई माँगें थी जैसे–

- चीनी सरकार प्रभावशाली जापानी राजनीतिक, वित्तीय और सैनिक सलाहकार नियुक्त करे।
- जापानियों को चीन के आंतरिक भागों में अस्पताल, स्कूल और मंदिर बनाने का अधिकार दिया जाए।
- जापान को पुलिस प्रशासन में और जापान से हथियार और युद्ध सामग्री और विशेषज्ञों की आपूर्ति में हस्तक्षेप करने दिया जाए।
- जापान ने वूचांग को चूजियेंग नानचेंग पथ से जोड़ने वाले एक रेलपथ के निर्माण के अधिकार की माँग की, और
- फारमूसा द्वीप और फ्यूजियान प्रांत के साथ जापान के विशेष संबंधों को देखते हुए, जब कभी इन क्षेत्रों में रेल पथों, खानों, बंदरगाह और गोदी पर कामों के लिए पूँजी की आवश्यकता हो तो, जापान से परामर्श किया जाए।

21.3.3 चीनी और पश्चिमी प्रतिक्रियाएँ

इस अंतिमेत्थम (अल्टीमेटम) की जो प्रतिक्रिया हुई वह मुख्य तौर पर अंतिम वर्ग पाँच पर केंद्रित थी। जापान के इस शब्द जाल ने कि ये माँगें नहीं "इच्छाएँ" थीं, और उसे गुप्त रखने के प्रयासों ने इस अनुमानों और अफवाहों को हवा दी कि जापान वास्तव में चीन में अपना संरक्षित राज्य बनाने की फिराक में था। फिर भी, पश्चिमी ताकतों की प्रतिक्रियाएँ देर से और दोहरेपन लिए आईं।

चीन के मुकाबले एक ऐसी सैन्य शक्ति थी जिसका प्रतिरोध वह सैन्य बल पर नहीं कर सकता था। इसलिए उसने जापानियों से टक्कर लेने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रचार को हथियार बनाया। युआन शी काई यह मानता था कि वर्ग पाँच की माँगें चीन में पश्चिमी हितों के लिए चुनौती होंगी, इसलिए उसने जापान को मात देने के लिए पश्चिमी ताकतों का समर्थन पाने की गरज से इनका उपयोग किया।

जापानियों ने चीन की ओर से किसी भी प्रकार के प्रतिरोध की अपेक्षा नहीं की थी। एक संधिगत बंदरगाह से निकलने वाले अखबार "नार्थ चाइना हेराल्ड" ने इन माँगों के विषय में लिखा कि ये "हिसाब-किताब लगाकर रखी गयी माँगें थीं जिन्हें अगर चीन ने मान लिया तो, यह जापान के हाथ में नियंत्रण दे देने के बराबर होगा"। इस अखबार ने गहराई से विश्लेषण करते हुए विदेशी शक्तियों का ध्यान चीन में घटित हो रही नाटकीय घटनाओं की ओर खींचा।

बातचीत का दौर लंबा चला और चीनियों ने इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न माँग वर्गों के हर प्रावधान पर लंबी बहस चले। उसका इरादा इस तरह अधिक से अधिक समय निकाल देने का था। जिस युआन शी काई के सम्राट बनने के पहले के प्रयासों ने उसके विरुद्ध जनता को भड़काया था, उसने अब जापान का प्रतिरोध करके अपनी बिगड़ी छवि को सुधारने का प्रयास किया।

युआन ने चीन में आधुनिक क्षेत्र से जापान को अलग रखने के अपने प्रयासों के लिए भी समर्थन प्राप्त किया। छात्रों और दुकानदारों ने जापानी सामानों के बहिष्कार का आयोजन किया। जापान में रह रहे चीनी क्रांतिकारी जापान के इस आक्रमण से ठगा हुआ महसूस करने लगे और उनका जापान छोड़कर चीन जाने का सिलसिला चालू हो गया। स्मरणीय है कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से जापान विभिन्न चीनी क्रांतिकारियों के लिए एक सुरक्षित शरणस्थल रहा था। जापान प्रेरणा का स्रोत भी रहा था। अब जापान ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह भी पश्चिमी साम्राज्यवादियों से भिन्न नहीं था।

जापान ने एक राजनीतिक गुट को दूसरे राजनीतिक गुट के विरुद्ध उकसाने का प्रयास किया तो, स्थिति और भी जटिल हो गयी। जापान ने यह धमकी दी कि अगर युआन ने सभी माँगें नहीं मानीं तो, वह उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सून यात-सेन जैसे क्रांतिकारियों का समर्थन देना शुरू कर देगा, और अगर युआन ने उसकी माँगें मान लीं तो वह युआन को सत्ता से हटाने के सून के प्रयासों में उसका समर्थन नहीं करेगा। इस अवधि में सून की भूमिका अंतर्विरोधी (या परस्पर विरोधी) भी रही और आपराधिक भी। जैसा कि इकाई 17 में बताया जा चुका है, साम्राज्यिक शक्तियों के प्रति सून यात सेन का रवैया हमेशा दोहरापन लिए रहा, क्योंकि उसने कभी भी एक स्पष्ट साम्राज्यवाद विरोधी रुख नहीं अपनाया। इस दोहरेपन का कारण यह था कि उसे इन्हीं साम्राज्यिक शक्तियों से समर्थन लेना होता था।

जापानी विदेश मंत्रालय को लिखे एक पत्र में, सून ने युआन को सत्ता से हटाने के लिए जापानी सहायता के एवज़ में जापान को युआन के प्रस्तावों से कहीं अधिक अनुकूल शर्तों का प्रस्ताव रखा। सून ने एक स्थायी चीन-जापान गठबंधन की गारंटी दी और भारी वाणिज्यिक विशेषाधिकारों और लाभों का वचन दिया। जापान को ये वचन देने के कारण सून का नेतृत्व कुछ समय के लिए संकट में पड़ गया।

इसके जवाब में युआन ने जापान को मात देने के लिए उन माँगों को सार्वजनिक कर दिया जिसे जापानी गुप्त रखने की आशा किए हुए थे। युआन के इस प्रचार के अनुकूल परिणाम हुए, क्योंकि इंग्लैंड और अमेरिका वर्ग पाँच की माँगों के दूरगामी परिणामों और उनके कारण चीन में उनके हितों के अवरुद्ध होने की आशंका को लेकर चौकन्ने हो गए। इंग्लैंड में जापानी राजदूत, इनोवे ने यह कह कर अंग्रेजों को तुष्ट करने का प्रयास किया कि अखबारों ने तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया था। उसने बिना हिचके यह पुष्टि की

कि "चीन को लेकर ऐसी कोई भी माँग नहीं रखी गई है जिसमें चीनी गणराज्य के राजनीतिक नियंत्रण या ऐसे किसी भी एकाधिकारी रियायत की बात शामिल हो जो महाशक्तियों के अभी तक स्वीकृत समान अवसर के सिद्धांत का अनादर करने वाली हो।"

अमेरिका ने अपने रुख को स्पष्ट कर दिया कि वह "चीन पर किसी विदेशी ताकत के द्वारा राजनीतिक, सैनिक या आर्थिक प्रभुत्व जमाने को उदासीनता से नहीं लेगा।" इस घटनाक्रम पर अमेरिका और इंग्लैंड का चिंतित होना मुख्य तौर पर उनके अपने हितों की रक्षा के उद्देश्य से था। चीन की राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अखंडता की बात और तमाम संबंधित बातों से गौण थी। जापान ने तुरंत अमेरिका को फिर यह विश्वास दिलाया कि अमेरिका ने बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ होते समय प्रत्येक विदेशी ताकत द्वारा दूसरी विदेशी ताकत के हित को मान्यता देने संबंधी जो "खुला द्वार" की नीति पेश की थी उसका उल्लंघन नहीं किया जाएगा।

बहरहाल, वर्ग पाँच की माँगों के संभावित दूरगामी परिणामों को लेकर हर ओर संशय की स्थिति थी। जापान के भीतर ही इसे घपले की कूटनीति कह कर इसकी आलोचना हो रही थी। अंतरिम तौर पर चीन ने बी माँगों को इस प्रावधान के साथ स्वीकार कर लिया कि वर्ग पाँच संबंधी सभी बातचीत भविष्य में किसी समय के लिए स्थगित कर दी जाएगी। 1916 में युआन की मृत्यु होने पर, ऐसा लगा कि जैसे तुआन ची जुई के राज में चीन जापान की माँगें मान लेगा। जापान ने युआन शी काई की मृत्यु के बाद तुरंत चीन की राजनीतिक स्थिति का जायजा ले लिया। जापान ने नीशीहारा ऋण की शक्ल में चीन को आर्थिक सहायता दे कर नये प्रधान मंत्री तुआन का समर्थन प्राप्त कर लिया, जिसे तुआन ने अपना राजनीतिक आधार मजबूत करने की गरज से तुरंत स्वीकार कर लिया। इन ऋणों के बदले में तुआन ने जापान से क्या वादे किए यह बात प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर जाकर सामने आई जब जनता में हुई प्रतिक्रिया के कारण तुआन को प्रधानमंत्री पद से हाथ धोना पड़ा।

बोध प्रश्न 1

सही उत्तरों पर (✓) का निशान लगाएँ–

1) चीन का अंतिम चिंग शासक कौन था?

   क) युआन शी काई

   ख) चेंग चुन

   ग) चुआन तुंग

   घ) कांग यू

2) प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने से चीनी अर्थव्यवस्था में कैसे वृद्धि हुई? लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

3) सही वक्तव्य पर (✓) निशान लगाएँ–

   क) जैसे ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, चीन मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया।

   ख) जब प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, चीन मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया।

   ग) जैसे ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, चीन ने मित्र राष्ट्रों से लड़ने के लिए जापान के साथ साँठ-गाँठ कर ली।

   घ) जब प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, चीन ने तुरंत अपने आपको तटस्थ घोषित कर दिया।

4) इक्कीस माँगें क्या थीं? लगभग 10 पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

21.4 युद्ध में भाग लेने का निर्णय

युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से चीन के भाग लेने का सुझाव मित्र राष्ट्रों की इस आशा के कारण आया कि उनकी चीनी साज-सामान और मानवशक्ति तक पहुँच हो जाएगी। 10 लाख चीनियों को प्रशिक्षण देने की महत्वाकांक्षी योजनाएँ भी बनीं। चीन ने कोई 100,000 मजदूर भेजे भी।

पीकिंग सरकार पर काबिज़ प्रधान मंत्री तुआन और आनफू सेनापतियों को इस भागीदारी से यह आशा थी कि उन्हें धन और हथियार दोनों मिल सकेंगे, और उन्हें अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए इन दोनों की ही बहुत सख्त आवश्यकता थी। युद्ध में भागीदारी का समर्थन जनता ने इस आशा से किया कि मित्र राष्ट्रों की विजय में योगदान करने से इस विजय की उपलब्धियों में हिस्सेदारी का चीन को अधिकार होगा और शायद वह अपनी नियति पर फिर से नियंत्रण बना लेगा। कम से कम आशा इतनी तो थी ही कि खोए हुए अधिकार और स्वायत्तता तो वापस मिल ही जाएगी और शायद जापानी माँगों को भी समाप्त किया जा सके।

राष्ट्रीय आत्म निधार्रण और क्षेत्रीय अधिकारों की बहाली के सवालों पर वुडरो विल्सन की घोषणाओं के प्रसार से चीन में आशा का संचार हुआ। युद्ध बाद की व्यवस्थाओं में राष्ट्रीय आत्म-निर्धारण को एक दिशा-निर्देशक सिद्धांत बनाने पर वुडरो विल्सन के जोर देने से चीनी युवाओं में आदर्शवाद की एक नयी भावना बनी। उन्हें यह विश्वास था कि शक्ति सम्मेलन में शांतुंग में चीन के अधिकारों को मान्यता मिलेगी और जापानी माँगों को रद्द कर दिया जाएगा।

21.4.1 शांति संधि

शांति संधि में भाग लेने वाले चीनी प्रतिनिधिमंडल में दक्षिण चीन के गणराज्य और पीकिंग सरकार दोनों के प्रतिनिधि शामिल थे।

भविष्य को लेकर चीनी जनता में आहलाद की जो स्थिति थी वह इस समय चकनाचूर हो गयी जब यह खबर वापस आई कि शांति सम्मेलन चीन की क्षेत्रीय समस्याओं को हल करना तो दूर, उल्टे शांतुंग क्षेत्र में जर्मनी के पट्टे वाले क्षेत्र को जापान को देकर जापान की स्थिति को मजबूत कर रहा था। इस कार्यवाही से पश्चिमी ताकतों की साम्राज्यिक हितों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि भी हो रही थी।

यह बात भी सामने आई कि इंग्लैंड, फ्रांस और युद्ध नेताओं की सरकारों के साथ कई गुप्त समझौते करके जापान को जर्मनी के अधिकार दे दिए गए थे। पेरिस में, चीन के प्रतिनिधियों ने अपने आपको दो कारकों के हाथ विवश पाया। पहले, शांतुंग क्षेत्र पर जापान के दावों को फरवरी, 1917 में जापान और इंग्लैंड, फ्रांस और इटली के बीच हुई एक गुप्त संधि में मान्यता दे दी गई थी। यह संधि उस समय संपन्न हुई थी जब चीन के युद्ध में प्रवेश के सवाल पर विचार-विमर्श चल रहा था। एक और क्षति पहुँचाने वाला रहस्योद्घाटन नीशीहारा ऋणों के संबंध में जापान और तुआन की रुई की सरकार के बीच

हुए समझौते के बारे में था। जापानी आर्थिक सहायता प्राप्त करने की गरज से, तुआन ने वचन दिया था कि चीन शांतुंग में रेलपथों के प्रबंध के जापानी प्रस्तावों को "सहर्ष स्वीकार" कर लेगा। संक्षेप में, तुआन ने इस समझौते के जरिए शांतुंग में जापान के विशेष हित को मान्यता दे दी थी।

इस तरह, संक्षेप में, संधि के अंतर्निहित सिद्धांत थे साम्राज्यवादी हितों को बनाए और बचाए रखना।

21.4.2 चीनी प्रतिक्रियाएँ

चीनी आशाओं के साथ विश्वासघात हुआ था। प्रभाव क्षेत्र, विदेशी सैनिक, विदेशी डाकघर, तार घर, दूतीय अधिकार क्षेत्र, क्षेत्रातीतता, पट्टे वाले क्षेत्र, विदेशी रियायतें और निश्चित शुल्क दरें सब जैसी की तैसी बनी रहनी थीं। यह लगता था कि चीन ने व्यर्थ ही अपना बड़ा मजदूर बल यूरोपीय मोर्चे पर भेजा था। लगता था जैसे सब कुछ गँवा दिया गया था। निराशा के इस बोध को शायद उस समय एक छात्र के इस विलाप में सबसे अच्छे ढंग से संजोया गया है—

> "हमें बताया गया है कि युद्ध के बाद जो वितरण होगा, उसमें चीन जैसे राष्ट्रों को, उनकी सभ्यता, संस्कृति, उद्योग को निर्बाध विकसित करने का अवसर मिलेगा। हमें बताया गया है कि गुप्त प्रतिज्ञा पत्रों और जबरन समझौतों को मान्यता नहीं दी जाएगी। हमने इस नए युग के उदय की प्रतीक्षा की, लेकिन चीन के लिए ऐसा सूर्य उगा नहीं। यहाँ तक कि राष्ट्र के पालने (चीनी दार्शनिक, कन्फ्यूशियस, की गृहभूमि, शांतुंग) को भी चुरा लिया गया।"

चीनियों ने इसे (संधि को') चीन के साथ विश्वासघात समझा, और उनका देशभक्ति और राष्ट्रीयता के बोध से उपजा रोष जबरदस्त ढंग से फूटा, जो पीकिंग में 4 मई, 1919 के प्रचंड प्रदर्शनों के रूप में सामने आया। इन प्रदर्शनों का लक्ष्य जापान, पश्चिमी साम्राज्यिक शक्तियों और पीकिंग के युद्ध नेता थे जिन्होंने जापानी साम्राज्यवाद के मजबूत होने की प्रक्रिया को सुगम किया था।

21.5 4 मई, 1919

पीकिंग राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के छात्र इस समझौते के विरुद्ध संगठित होने लगे। पेरिस सम्मेलन में गए प्रतिनिधियों से संधि पर हस्ताक्षर न करने का आग्रह करने की योजनाएँ बनीं। चीन के सभी भागों में प्रदर्शनों का भी विचार बनाया गया। पीकिंग के तियेनान मेन चौक में एक विराट प्रदर्शन की योजना बनाई गयी।

4 मई, 1919, रविवार था। स्कूलों और कॉलेजों के 13,000 छात्र जमा हुए। उन्होंने इस समझौते की निंदा की और "घर के गद्दारों" के विरुद्ध कार्यवाही की माँग की। उन्होंने जापान में नियुक्त चीनी मंत्री को पीटा।

इस प्रदर्शन की देखादेखी और प्रदर्शन भी हुए। विरोध-प्रदर्शनों का आकार बढ़ता गया और वे और भी जल्दी-जल्दी होने लगे। नये सामाजिक और आर्थिक वर्गों ने इनका समर्थन किया। चीनी अर्थव्यवस्था का बहुत विस्तार हो गया था, और इसके साथ-साथ मजदूरों, उद्योगपतियों और सौदागरों की संख्या भी बढ़ गयी थी।

साम्राज्यवादियों के विरुद्ध होने वाले प्रदर्शनों से छात्र इन वर्गों के और घनिष्ठ संपर्क में आ गये। 4 मई की घटना ने चीनी समाज के विभिन्न वर्गों में एक ऊँचे स्तर की राजनीतिक चेतना जगा दी और देशभक्ति की एक अभूतपूर्व लहर उनमें उमड़ पड़ी। चीन के लिए यह अब तक की बिल्कुल अभूतपूर्व घटना थी। इस जन-दबाव के आगे प्रधान मंत्री तुआन और उनके मंत्रियों को त्याग पत्र देना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप वर्सेल्ज में चीनी प्रतिनिधियों ने संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।

अब हम 4 मई, 1919 के महत्व की छानबीन भी कर लें। 4 मई का प्रदर्शन केवल एक आंशिक विजय थी। जनता का विरोध तो गद्दार युद्ध नेता सरकार समझी जाने वाली युद्ध सरकार के पतन का कारण बना, वहीं गुप्त संधियों को न तो रद्द किया गया और न ही जापानी आक्रमण को कम किया गया। हाँ, इसके कुछ दूरगामी लाभ अवश्य हुए।

युद्ध और इसके समझौते ने अंततः और स्पष्ट रूप में इस सच्चाई को रेखांकित कर दिया कि पश्चिमी राष्ट्र मुख्य तौर पर अपने हितों की रक्षा करने में रुचि रखते थे। इस सच्चाई को समझ कर ही चीनी बुद्धिजीवियों को दूसरे वैचारिक और राजनीतिक विकल्पों की ओर मुड़ना पड़ा। उन्हें वह मदद अब अधिक ग्राह्य हो गयी जो बोल्शेविक रूस उन्हें देने का इच्छुक था। इसके अतिरिक्त, सोवियत संघ दूसरे साम्राज्यवादी राष्ट्रों से बिल्कुल अलग था। जुलाई, 1918 में, सोवियत संघ ने मंचूरिया में जार शासन वाले रूस द्वारा हथियायी गयी सारी भूमि और विशेष हितों को छोड़ दिया। उसने चीन के प्रभुसत्तात्मक क्षेत्रीय अधिकारों की बहाली के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। यह सब पश्चिमी ताकतों और जापान की स्थिति के बिल्कुल विपरीत था।

पहली बार चीन में बड़े पैमाने पर राजनीतिक लामबंदी देखने में आयी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों से बन रहा एक नया बुद्धिजीवी वर्ग अब एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति बन गया। विभिन्न सामाजिक समूहों या वर्गों के बीच बने संपर्कों से आने वाले समय में एक अधिक संगठित राजनीतिक दिशा में बढ़ना सुगम हो गया। एक नया राष्ट्रीयता बोध दिखायी देने लगा। इस नये राष्ट्रीयता बोध के साथ ही चीन 1920 के दशक में राष्ट्रीय पुनर्एकीकरण और पुनर्निर्माण की दिशा में बढ़ा। अधिक संगठित राजनीतिक कार्यवाही और विवादास्पद विचारधाराओं और चीन द्वारा चुने जाने वाले निश्चित विकल्पों के लिए आधार तैयार हो चुका था। इन्हें कुओमितांग (चीनी राष्ट्रवादी पार्टी) और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की शक्ल में उभरी दो निश्चित राजनीतिक पार्टियों के गिर्द घूमना था।

बोध प्रश्न 2

1) पेरिस शांति सम्मेलन के दौरान जापान के हित किस प्रकार पूरे हुए? लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) चीन में 4 मई के आंदोलन का महत्व बताइए। पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....

21.6 सारांश

वैसे तो 1911 की चीनी क्रांति अपने ध्येयों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही। आगे चल कर इसकी पैदा की हुई अव्यवस्था और खतरनाक स्थितियों ने चीन में जीवन के अस्तित्व को ही व्यर्थ कर दिया। 1912 के प्रारंभ में चीन पूरी तौर पर गड़बड़ी की स्थिति में था। क्रांति ने समाज की राजनीतिक व्यवस्था और ताने-बाने को नष्ट कर दिया था। राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक मंदी और तानाशाह शक्तियों, इन सबने मिल कर राज्य को भीषण अव्यवस्था और अराजकता की स्थिति में ला दिया था।

युआन शी काई के सत्ता में आने पर चीनी जनता की आशाएँ बहुत अधिक जागृत हो गयीं। एक गणतांत्रिक सरकार और जनतांत्रिक सरकार कायम करने की उसकी महत्वाकांक्षा तो पीछे रह गयी। उसका पहला काम मांचूओं का तख्ता पलटना था। लेकिन चीन का सम्राट बनने की उसकी पुरानी महत्वाकाक्षा उसके दिमाग से कभी नहीं निकली। जब वह गणराज्य का राष्ट्रपति बना तो, सभी तरह की शक्तियाँ उसकी सहायता करने को तैयार थीं। यह सहायता उसे अपनी स्थिति मजबूत करने को समर्थ बनाने के लिए तो काफी थी लेकिन वह चीनी स्वाधीनता और राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के लिए स्थायी तौर पर हानिकारक थी।

अपने पूरे शासनकाल के दौरान उसने संसदीय सरकार बनाकर राजतंत्र को बहाल करने और एक स्थायी, एकताबद्ध चीनी समाज बनाने के लिए प्रयास करके कई प्रयोग किए, लेकिन एक के बाद एक सभी नाकाम हो गये। उसके शासन के इन तमाम वर्षों में निरंकुशता का बोलबाला रहा जो उसके पतन का कारण बना। वह राजनयिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सबसे कट गया। उसके पास कोई अतिरिक्त वित्तीय संसाधन नहीं रहे, और सभी मोर्चों पर उसे समर्थन मिलना बंद हो गया।

जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ तो चीन ने पहले अपनी तटस्थता की घोषणा की। जब जापान मित्र राष्ट्रों के साथ मिल गया तो, चीन के राजनीतिक आकाश में खतरे के घने बादल उमड़ने लगे। चीन के प्रति जापान के शत्रुतापूर्ण रवैये और उसकी आक्रामक कार्यवाहियों ने चीन के संकट को और भी गहरा दिया। जापानियों ने जिन इक्कीस माँगों को माँग नहीं इच्छाएँ बता कर पेश किया था उनसे चीनी अर्थव्यवस्था और राजतंत्र को एक और धक्का लगा। जापान चीन में एक संरक्षित राज्य बनाने की जी-जान से आशा कर रहा था।

इक्कीस माँगों के प्रति चीन की प्रतिक्रिया गंभीर किस्म की और दूरगामी थी। जल्दी ही पूरे चीन में सभी किस्मों के जापानी प्रतिष्ठानों के विरुद्ध प्रदर्शन शुरू हो गए। जापान विरोधी भावनाएँ चीन में अपने चरम पर पहुँच गईं। और इसके प्रति पश्चिमी ताकतों की प्रतिक्रिया अस्पष्ट और दोहरी बनी रही। चीन का विश्व युद्ध में शामिल होना मुख्य तौर पर रणनीति के तहत था, क्योंकि यह सोचा गया था कि मित्र ताकतों को समर्थन देने से चीन को मदद मिलेगी या उसे लाभ होगा। राष्ट्रीय आत्म निर्धारण और क्षेत्रीय अधिकारों के सवाल पर वुडरो विल्सन की ऐतिहासिक घोषणाओं से चीनियों के मन में आशा की किरणें फूटीं। चीनियों का विश्वास था कि शांति सम्मेलन में वे अपने अधिकारों को मान्यता दिलवाकर जापान से अपना हिसाब चुकता कर लेंगे।

इसके ठीक विपरीत पेरिस शांति सम्मेलन चीनियों के लिए एक घोर असफलता सिद्ध हुआ। चीन से संबंधित सभी गंभीर मुद्दे अनसुलझे रहे। बल्कि, जापान ने चीन से बाजी मार ली और सारे प्रावधान साम्राज्यवादी ताकतों के पक्ष में चले गए। इस घटना के बाद पूरा चीनी समाज अत्यधिक कुंठित हो गया और उसका मोह भंग हो गया। इस निराशा के कारण देशभक्ति के संवेगों और भावनाओं का व्यापक रूप से विस्फोट हुआ जिसको व्यापक जन-समर्थन मिला और अंत में उसने 1919 में 4 मई के आंदोलन का रूप ले लिया।

21.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) ग

2) प्रथम विश्व युद्ध के कारण चीनी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रतिस्पर्धा खत्म हो गई। चीनी उद्यमियों ने अवसर का लाभ उठाया, एक नये सौदागर वर्ग का उदय हुआ। अपना उत्तर उपभाग 21.2.3 के आधार पर लिखें।

3) घ

4) इक्कीस माँगों में कई मुद्दे शामिल थे और वे पाँच वर्गों में विभाजित हैं/अपना उत्तर उपभाग 21.3.2 के आधार पर लिखे।

बोध प्रश्न 2

1) पेरिस शांति सम्मेलन जापान के पक्ष में था। इसने जर्मनी के पट्टे वाले क्षेत्र शांतुंग को जापान को देकर जापान की स्थिति मजबूत कर दी। रेलपथों की व्यवस्था भी जापान को दे दी गयी।/अपना उत्तर उपभाग 21.4.1 के आधार पर लिखें।
2) शांति सम्मेलन में पश्चिमी ताकतों ने जापान की आशाओं को झूठा कर दिया। इससे चीनियों में जबरदस्त क्षोभ पैदा हुआ, जिसके परिणामस्वरूप एक देशव्यापी देशभक्तिपूर्ण आंदोलन हुआ। उपभाग 21.4.2 पढ़कर अपना उत्तर लिखें।
3) यह चीनियों की राजनीतिक जीत थी। इसने युद्ध नेताओं की सरकार का पतन करवा दिया। देखें भाग 21.3

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

E.H. Norman: **Japan's Emergence as a Modern State.**

Bai Shouyi: **An Outline History of China.**

Immanuel C.Y. Hsu: **The Rise of Modern China.**

Jean Chesneaux et al: **China from the 1911 Revolution to Liberation.**

1. चीन-जापान युद्ध के दौरान विदेशी पत्रकार युद्ध सम्बंधी समाचार एकत्र कर रहे हैं।
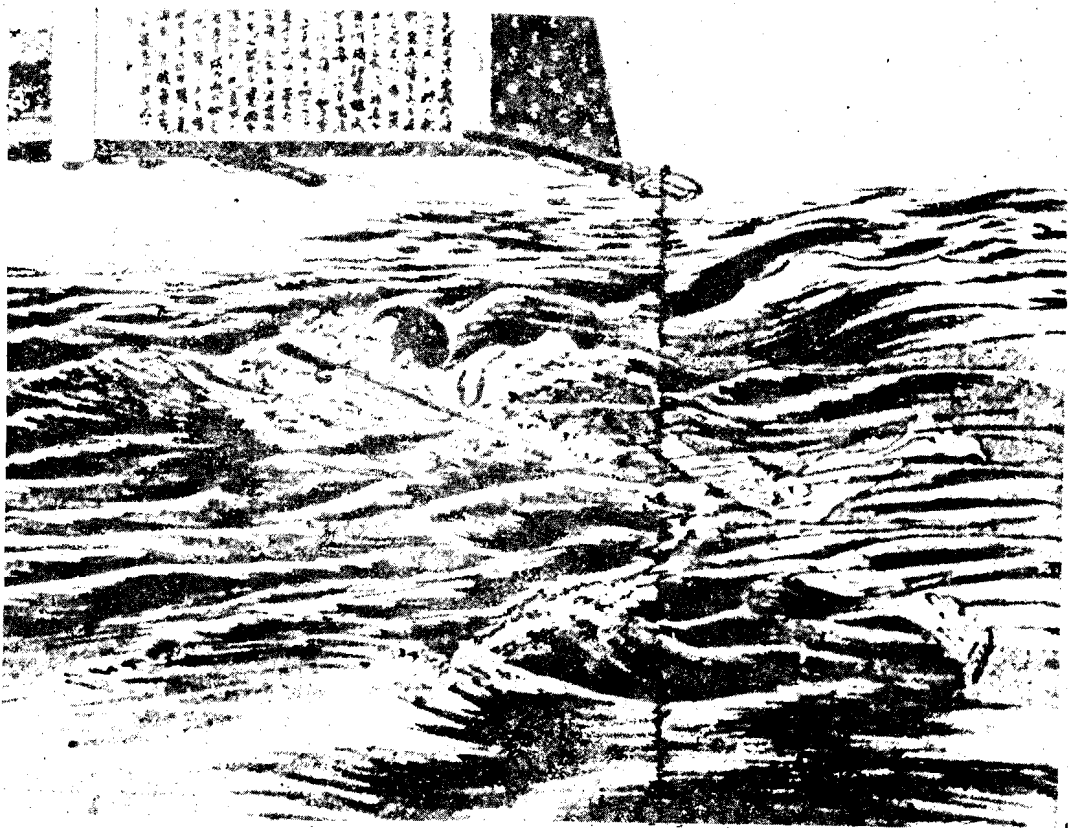
2. चीन-जापान युद्ध के समय कोरीया के मोर्चे पर चीनी सेना की गतिविधियों की जानकारी हासिल करने के लिए नदी में तैरता एक जापानी सैनिक।
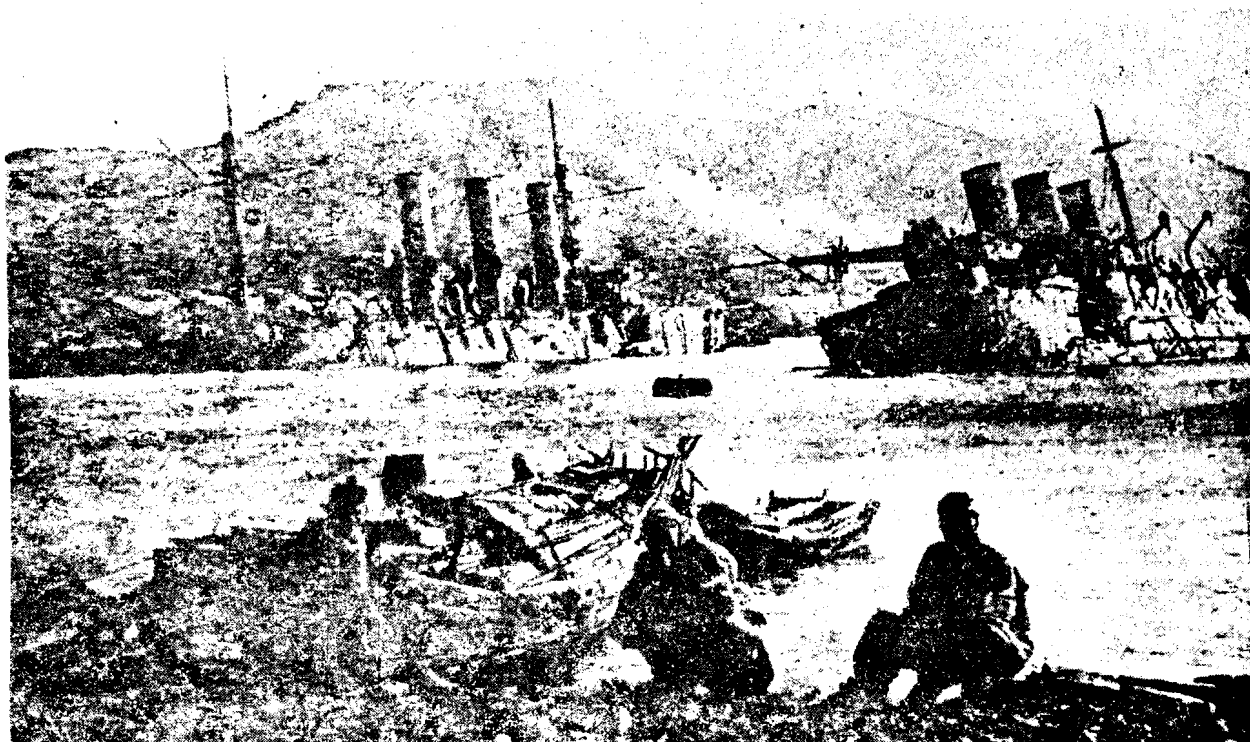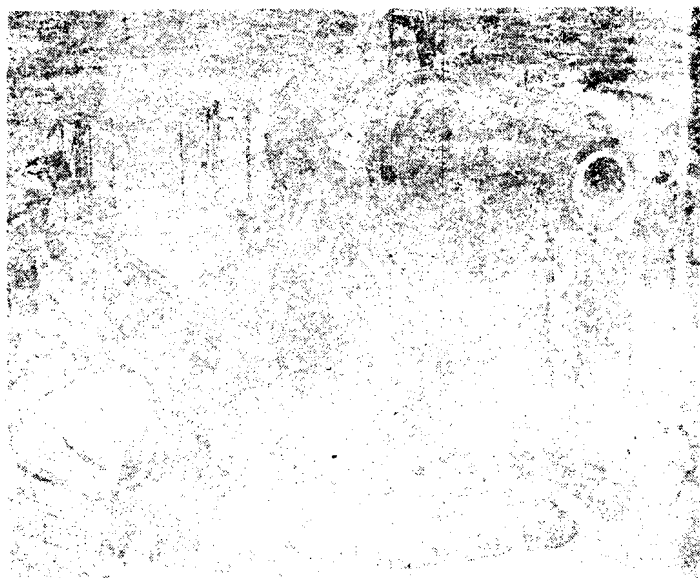
4. रूसीयों द्वारा पोर्ट अर्थर पर आत्मसमर्पण की खुशी में पतंग उड़ाते जापानी सैनिक।

6. सुन यात सेन और उनकी पत्नी सून चिंग लिंग।